IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

आधुनिक परिपेक्ष मैं स्वामी विवेकानंदजी के शेक्षिक विचारो का समीक्षात्मक अध्य्यन

Manali Sahu and Dr. Pallavi Nagar
M.ED Student, DAVV University, Indore, MP India
Professor, Arihant College Indore M.P, India

"जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें,
मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सके और
विचारों का सामंजस्य कर सकें
वहीं वास्तव में शिक्षा कहलाने योग्य है।"

…….स्वामी विवेकानंद

प्रस्तावना

भारत एक युवा राष्ट्र है। समय के साथ-साथ भारत की शिक्षा प्रणाली में भी परिवर्तन होते रहे हैं। उस समय भारत भी अनेको रियासतों में बटा हुआ था। जिसके कारण भारत में जिसकी भी सत्ता होती वह शासन व्यवस्था और शिक्षा प्रणाली को अपने नियमों के अनुसार चलाता। भारत में जब मुगलों का शासन का अंत हुआ उसके बाद सन 1830 में ब्रिटिश लोगों ने भारत को अपने अधीन बना लिया और करीब 117 वर्षों तक भारत पर शासन किया। ब्रिटिश काल में भी भारत की शिक्षा प्रणाली में बहुत बदलाव आए। लॉर्ड मैकाले को आधुनिक शिक्षा का जनक माना जाता है। स्वामी विवेकानन्द भारतवर्ष के अमर सपूतों में से एक हैं। उनकी आध्यात्मिकता की गहराई तथा सम्पूर्ण मानवमात्र के प्रति उनका प्रेम हमारे देश की धरोहर है। शिक्षा के क्षेत्र में भी उनके विचारों में उनकी मानवता के प्रति प्रेम तथा आध्यात्म की भावनायें दृष्टिगोचर होती हैं। इनका व्यावहारिक रूप रामकृष्ण मिशन के जन कल्याणकारी कार्यों में देखा जा सकता है। स्वामी जी अपने

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

देशवासियों की अज्ञानता और निर्धनता, इन दो से बहुत चिन्तित थे और इन्हें दूर करने के लिए इन्होंने शिक्षा की आवश्यकता पर बल दिया था। भारतीय शिक्षा को भारतीय स्वरूप प्रदान करने के लिए ये सदैव स्मरण किये जायेंगे। स्वामी जी के विचार से मनुष्य को आत्मज्ञान तभी होता है जब उसे भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का ज्ञान हो । स्वामी जी ने भौतिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रत्यक्ष अनुकरण, व्याख्यान, निर्देशन, विचार-विमर्श और प्रयोग विधियों का समर्थन किया है और आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए स्वाध्याय, मनन, ध्यान और योग की विधियों का समर्थन किया है। इन्होंने अपने अनुभव के आधार पर यह बात बहुत बलपूर्वक कही कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान प्राप्त करने की सर्वोत्तम विधि योग विधि (एकाग्रता) है। स्वामी जी स्वयं शिक्षक थे। इन्होंने देश-विदेश में लोगों को वेदान्त की शिक्षा दी थी और उन्हें ध्यान क्रिया में प्रशिक्षित किया था। पर इन्होंने उपरोक्त सभी विधियों को कुछ अपने विशिष्ट रूप में प्रयोग किया था। अतः यहाँ इनके इस विशिष्ट रूप को समझना आवश्यक है। स्वामी विवेकानन्द जी ने मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णतः की अभिव्यक्ति को शिक्षा माना है। स्वामी जी के अनुसार, शिक्षा जीवन संघर्ष की तैयारी है क्योंकि जो शिक्षा जीवन जीने की कला नहीं सिखाती जीवन को सम-विषय परिस्थितियों में अनुकूल आचरण करना नहीं सिखती वह शिक्षा व्यर्थ है।

1. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, अध्यापक का चरित्र अत्यन्त उच्च कोटि का होना चाहिए।
2. स्वामी विवेकानन्द के अनुसार, अध्यापक को विषय का ज्ञाता तो होना ही चाहिए साथ ही उसके अन्दर प्रेम, सहानुभूति, त्याग, निष्पक्षता की भावना का होना आवश्यक है।
3. विद्यार्थियों के सम्बन्ध में स्वामी विवेकानन्द का विचार था कि अपने आपको पहचानो ज्ञान तो आपके अन्दर है उसे बाहर निकालो अपनी अन्तरात्मा को चेतन करो बिना इस सबकी बाह्य शिक्षण व्यर्थ है।
4. स्वामी विवेकानन्द ने परोपकार तथा समाज सेवा को सर्वोपरि मानते हुए कहा है कि नर सेवा ही नारायण सेवा है।
5. स्वामी विवेकानन्द ने दमनात्मक अनुशासन का विरोध करके प्रभावात्मक अनुशासन पर बल दिया है।
6. स्वामी विवेकानन्द ने आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही लौकिक समृद्धि को भी आवश्यक माना है। यही कारण है कि उन्होंने पाठ्यक्रम में आध्यात्मिक विषयों के साथ-साथ लौकिक विषयों को भी समावेशित किया है।
7. स्वामी विवेकानन्द ने मन की एकाग्रता पर विशेष जोर दिया है क्योंकि मन को एकाग्र किए बिना किसी भी शिक्षण विधि का प्रभाव स्वतः न्यून होता जाता है। यद्यपि उन्होंने अनुकरण विधि, विचार-विमर्श, उपदेश, परामर्थ वैयक्तिक निर्देशन विधियों को भी शिक्षण विधि के रूप में बताया है।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
Impact Factor: 7.53
Volume 4, Issue 1, December 2024

स्वामी विवेकानन्द ने स्त्री को पुरुषों के समान स्थान देते हुए कहा है कि जिस देश में स्त्रियों का सम्मान व आदर नहीं होता वह देश कभी भी प्रगति नहीं कर सकता। स्त्रियों के उत्थान के सम्बन्ध में स्वामी जी ने कहा था कि- "पहले अपनी स्त्रियों को शिक्षित करो तब वे बताएँगी कि उनके लिए कौन-कौन से सुधार करने आवश्यक हैं।